Book-Post

45

To,

If not delivered
please return to :

EDITOR,
THE VEDIC PATH,
P.O. Gurukul Kangri,
(U.P.) 249404.

श्रीगणेशायनमः ॐ अथगर्भरक्ष
उपाव ॥ कुंभारके चाककातागा ऽव
वार दिन आन धूपदेके वांधैगर्भरक्षा
होय ताग मंत्र ॐ नमो आदेश गुरु को
वांधैं आप वांधा सागरसुत कुंभराय वा०
धेन वीनठ तीनीरवांधा सो वारपठ
तागे कों गांठदेई धूपदेवांधेवा०
लकजावे ॥ २ ॥ अथधी फुले घुघ
कीः नोरयुलीलीचूउं सोराकालेकुते
काद लरवरलकरै अंजनकरै ०१ ०००००
वावले कुतेगीदरका ठेकी लालचौं होठलीकी
सीगको ठमामकेदूधमैघरले प्रसर २०

ॐ विष्णु३ ॐ नमः परमात्मने श्रीपुरा
णपुरुषोत्तमाय अद्य पृथिव्यां ब्रह्मणो द्वि
तीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्व
तमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कृतत्रेताद्वापरान्ते
कलियुगस्य प्रथमचरणे आर्यावर्ते पु
ण्यदेशे बौद्धषष्ठ्यान्नाम ध्ये अमुक
नाम संवत्सरे अमुकायने अमुक
ऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमु
कवासरान्वितायां अस्यां अमुकतिथौ
अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकराशे अमु
कसम्माहं चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे अमुक
देवस्य यथामिलितोपचारैः पूजनमहं
करिष्ये ।

ॐ श्रीः

त्र्यंवकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं
उर्वारुकमिव वंधनान्मृत्योर्मुक्षीय
मामृतात् १ ॐ ह्रौं जूंसः त्र्यंवकं यजा
महे सुगंधिं पुष्टि वर्द्धनं उर्वारुकमि
व वंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स
जूं ह्रौं ॐ २ ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः
त्र्यंवकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं
उर्वारुकमिव वंधनान्मृत्योर्मुक्षी
यमामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं
ह्रौं ॐ ३

[illegible]

सानेके वरन अति[illegible] के वरन ना सोसी ताके हर न हार हिरन पवायो है
।।४४।।कवित्त।। [illegible] अंग्रमही बरक के सिकारतमोपावड हो[illegible]
सरोमे वासे अ[illegible]।। ठलतोफरे बधाइ तिनाको हरन देषदो सहे दीपल
श्व उठन सिरि[illegible]याके। पाछे ठलबल करपन मे बितोड गयो है सो चं
द को मन समध महरे याको। अहमारलोग धामी दीवाना छुद बोवन को
होइ गोव हीहवास जैसे होरी के दिनैया को ।।४५।।कवित्त।। म. गमरीच
हू के लागोवा गोबा नराम चंद करी दगाबाजी गीदीला गोज बमरने। बा
ने कीनरफदा ऊसूरबीरपाली जाइ देवे नैन जामो नीरफीरनै। जान
की केजीने हूं अबरकीसु भलू लफरीहे जिदिगं बरजे से बेद बरनै। आ
यो फिर जीवचंद दोजक के अंद माह कर आयो षबर लब जान असें ब
रनै ।।४६।।कवित्त।। पुरष बियोगी स्यापम गमारी म. गने नीगफदे बा आ

लीए नहीं बढाइ। चरन धोइ जल पीय के। लीने नाव चढाइ ॥४०॥ दोहरा॥ राम ना
म के लेत ही। लंघे सागर तर जाइ। देह धरे को धर्म है। [illegible] तरइ नाव ॥४१
॥ कवित्त ॥ सीता सौं लछमन राम कीयो छिरि माछि [illegible] आमेता करे फ
ल बन को। केते बरस गुजरा नेचंद गिरि मो जाइ काटे दि[illegible] बकुल कमल तुषा
र ताप घन को। रावन आहुरी परा वी के करन हार। जिम घर घालइ जो जालंद
लिये सीय बन को पूवी लिरी कहे करी अपने अपने छिरा दरसो देषे को ऊजा
गीरणवारे [illegible] जन को ॥४२॥ कवित्त ॥ सुनि कै दहसिर धाईयो। मानो लाय पंथ
सीता बन को [illegible] की गही जनक बन मंठ ॥४३॥ कवित्त ॥ दगा वाज कपटी
की बात सुनी कप[illegible] जोगी के आयो है। दूरही ने दूर देष
न की आउ रामसे [illegible] षह लिछमन कहायो है। लंक को मवा
सी पकरयो है। छल वास [illegible] इहइ कुरंग पै कुरंग नीन आयो है।

लाहडलारलारकरलाहड गिलौकुलेकेकई मंदरकौ । कीयाचाहलाहडू
औरकाजलातेलेलाहड सालपायके बहलनाम्पामाहकमजिनपदरको
॥२६॥ कवित्त ॥ नहीरोजरामचंदछलकोगमनकीनोजसरथकेप्रानचं
लेमा०पेहीयोदरक्यो । पृथ्वीकोपंसोजो चंदबनलाकनीहडसंगपुरद
ल्लिरादरहेउनकीकरदरको । बालीजेपुरानीतेनमोओरघुनाथजीनेमे
क्योसुचंदजिनमुफतीमदरको । कीनोहडपरहेजराजा मादरकीआनर
तेपाईकेकह्योमामाहुंकमजिनपदरको ॥३०॥ कवित्त ॥ पुरलेकीया
हजोननेकनविआदंस्याहड मो [illegible] याहड [illegible] हारसालिरहेकहुपाये
हगणकोसतीनचारवेगमगा [illegible] आमसोमहीमा० क
लायेहड उहांलेउठेपालम्पागेपावेचलेआत [illegible] समकरेबात [illegible]
धयोबनायोहडू चंदजिनमलजगपाक [illegible] गामाकी ॥ [illegible]

दरामा
रामाय
णप

नंपगधरकसिंघको दुखबासो है ॥ ३ ॥ दोहरा ॥ [illegible] चत्रकूटपोरिबसि
सो ॥ जिहकुजरकसिरनाम सुंदर [illegible] ॥ [illegible] बटमुकाम ॥ ३८ ॥ दो
॥ दोहरा ॥ लानमृगसआगपांवरथसुजी निरमाल ॥ [illegible] लेनकेरथचढ
आइगए दरहाल ॥ ३० ॥ कबित्त ॥ आपही बनाइ कि[illegible] काहूनो सिधाइ
गाइ जाकोहै इन बारनाको कहा लीयो ॥ आपनमै थासोरू ठ बाडजोच
लोहै इरूं दूरपकु सोआइ चित्रकूटलई याआइ लियो है ॥ लस्यके
दीनले नमुनलसर आपलेन दई है इ दिलासा श्रुरूसीला बिदाकीयोहै
भवा नेचंदरामकी दु हाईकोदे दोराआइ दीयो है ॥ ३१ ॥ दोहरा ॥ लो
ननकरहे रालको ॥ रहेलमधरसो ॥ लरथसमान जहानमे ॥ ओरबीरनहि
कोइ ॥ ३२ ॥ दोहरा ॥ रामचनमारनको चले ॥ बतिथनको जिबडानदे
पठयो करदूदकौ ॥ नरकमओरकमान ॥ ३३ ॥ कबित्त ॥ रामबनबासीर

अथ्या दशा षट् तिन चार मिल कहत विचार विचार साधु
सभि मिल साष वित्तावृत हरि का सिमरन सार ॥ कहो श्र कृ०
दु पें धन पुर्वी साप ठहैं: आप सम: विचार कः राजा हम:
भोजन न दिजै कः आओ व्रत कार कहो श्र कश्री भागवत हः०
राजा कहै तुम कष्ट न दिजो ना हः ने और उपाय द्रोपदा कहः
श्री कृष्ण समारो तुम्हारे सदा सहाय कहो श्र कश्री भागवः० ।

[illegible]

[illegible] मैं [illegible]

१४तह. ३ [illegible] भजनकेरी ३ भाई [illegible] ८७ [illegible] ह्वो [illegible] १२

धरई ते. [illegible] तिन [illegible] रहत. ३ तवै [illegible] ३. दिनंसर्वे करत हि ३० ॥

कै अब [illegible] चिंत नजेताप [illegible] सुत [illegible] कुलपिता [illegible] सहसार

कवलनैनकि. [illegible] गोके [illegible] कारे [illegible] केष्णकर

होरारत्ने - [illegible] भावफलम् प. ४१

	लग्न	२ ध-	३	सु	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सू	व. १५ पीडा	व. ७ द्रव्यहानिः-	व. २० द्रव्यलाभः	व. १४ कलहः	व. ९ पितृमृत्युः	व. २२ सर्वस[illegible]	व. २४ [illegible]नाशः	व. १० स्त्रीप्राप्तिः	व. १० तीर्थदः	व. १९ वियोगः	व. २४ पुत्रलाभः	व. २८ हानिः
चं	व. २७ रोगः	व. २७ पीडा	व. ५ बंधुलाभः	व. २२ पुत्रलाभः	व. ६ वह्नि[illegible]नः पीडा	व. ६ नीचः [illegible]	व. १५ मातृनाशः	व. [illegible] वातादिवे[illegible]प्राप्तिः	व. २० तीर्थयात्रा	व. ४३ लाभः	व. २० राजमान्य[illegible]	व. ३ हानिः पीडा च
मं	व. ५ अग्नि[illegible]	व. १२ धनहानिः	व. १३ बंधुसौख्यं	व. ८ बंधुहानिः	व. ५ बंधुनाशः	व. २४ पुत्रलाभः	व. २७ भार्यानाशः	व. २२ विपत्तिः	व. १८ पितृनाशः	व. २७ शत्रुक्षयम्	व. ४५ धनलाभः	व. ३५ हानिः
बु	व. १० कान्तिः	व. २६ धननाशः	व. [illegible]२ धनहानिः	व. २[illegible] धनहानिः	व. २६ पुत्रलाभः मातृमृत्युः	व. २८ शत्रुनिवृत्तिः	व. २७ [illegible]	व. १४ द्रव्यनाशः	व. २९ मातृमृत्युः	व. १९ द्रव्यम्	व. ४५ धनलाभः	व. १२ [illegible]हानिः
बृ	व. ८ प्रजाकरः	व. ३९ धनदः व. २७ राजमाननम्	व. २० [illegible] लाभः-	व. १२ बंधुधनलाभः	व. ७ मातुलारिष्टम्	व. ४० शत्रुभयम्	व. २२ [illegible]लाभः-	व. २१ महाव्याधिः	व. १५ पि[illegible]रिष्टम्	व. ११ धनम्	व. ११ धनम्	व. २५ व्ययः

चैतर ॐ

सतोगुण के प्रसतते ज्ञानेंद्रिआं पंच चार अंतहकरण मन
बुध चित हंकार ॥

रजो गुण

१ आकाश के सकासते स्रोत्रेंद्रि संभूतं वायु त्वक इंद्रि संभूतं
तेज के सकासते चक्षु इंद्रि संभूतं अप के सकासते रस
ना इंद्रि संभूतं भू सकासते घ्राणेंद्रि संभूतं

---

१ आकास के सकासते वाणी इंद्रि संभूतं
वायु सकासते पाणी इंद्रि संभूतं
तेज सकासते चरण इंद्रि संभूतं
जल के सकासते उपस्थ इंद्रि संभूतं
पृथ्वि के सकासते गुदा इंद्रि संभूतं ॥२ तोगुण

~~स्रोत्र इंद्रि का देवता दिग्पाल सबद देवसा~~

चक्षु इंद्रि को देवता सूर्य हा ता पे लादेसा
चर रसना का देवता वरुण विसा सवाद लेत
त्वक का देवता वायु ते परस विसा
घ्राण का अश्वनी कुमार देवता हे गंध विसा

वाणी इंद्रि का देवता अग्न विसा सबद
पाणी का देवता इंद्र त्याग ग्रहण पाठण
चरण का देवता वहु विसा गमन
उपस्थ लिंग का देवता ब्रह्मा विसा वीर्य त्यागरण
गुदा का देवता पित्र विसा मल त्यागरण
